रौशनी के मानिंद हिंदी पट्टी को राह दिखाती 'स्वनिम'

विवेक शील

शोधार्थी, हिंदी विभाग, गुरु घासीदास
विश्वविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़
ईमेल- vivekSheel045@gmail.com

देश में जब हिंदी एवं हिंदी के पठन-पाठन और उसकी गंभीरता को लेकर प्रश्न उठ रहे हैं, उस समय हिंदी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय अपनी जिम्मेदारी या दायित्त्वबोध का निर्वहन प्रमाणिकता के साथ कर रहा है। देश में पिछले कुछ वर्षों में हिंदी भाषा और साहित्य में पत्रिकाओं का प्रकाशन तीव्र गति से हो रहा है। यह एक ओर हिंदी भाषाई लोगों के लिए संतोष का विषय है, वहीं दूसरी तरफ हिंदी की गंभीर और प्रमाणिक पत्रिकाओं की अनुपस्थितिके कारण चिंता का विषय भी। प्रायः विभिन्न हिंदी विभागों से, स्वायत्त या वित्तपोषित सरकारी संस्थानों से बहुल संख्या में हिंदी पत्रिकाओंका प्रकाशन हो रहा है। उनमें अधिकांश पत्रिकाओं में गुणवत्ता की कमी है। 'स्वनिम' पत्रिका इस मामले में अपवाद स्वरूप है।

स्वनिम पत्रिका के पिछले दो अंको में प्रकाशित सामग्री के विश्लेषण के पश्चात हम कह सकते हैं कि यह पत्रिका हिंदी भाषा और साहित्य की कुछ चुनिंदा, श्रेष्ठ और स्तरीय पत्रिकाओं में शामिल होती दिखाई दे रही है। हिंदी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय से निकलने वाली स्वनिम पत्रिका अपनी अल्प उम्र में ही रोशनी के मानिंद हिंदी पट्टी को नयी राह दिखा रही है। स्वनिम सृजन और शोध की संदर्भित एवं पूर्व समीक्षित त्रैमासिक पत्रिका है। स्वनिम पत्रिका का दूसरा और तीसरा अंक (अक्टूबर2022–मार्च 2023) कहानी केंद्रित अंक है। समय की शिला पर शीर्षक से संपादकीय लेख में गौरी त्रिपाठी ने स्वनिम पत्रिका के लिए 'सर्जनात्मक वैविध्य का लघु फलक' कहा है। स्वनिम पत्रिका का अनुक्रम बहुत व्यवस्थित और सारगर्भित है। पत्रिका की अंतर्वस्तु की संरचना पाँच स्तंभों में हुई। विरासत स्तंभ में प्रेमचंद की अपेक्षाकृत कम चर्चित लेकिन मार्मिक और प्रासंगिक कहानी मुक्तिमार्ग का प्रकाशन किया गया। मुक्तिमार्ग कहानी की तरफ हिंदी के आलोचकों का ध्यान बहुत कम गया है। प्रेमचंद की इस कहानी के चयन व प्रकाशन से स्वनिम पत्रिका के उद्देश्य और साहित्य के प्रति सजकता का हम सहज अनुमान लगा सकते है। स्वनिम पत्रिका का दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ विशेष शीर्षक से है। इस स्तंभ में अवध के अरघान कवि बाबा त्रिलोचन का साक्षात्कार है। यह साक्षात्कार आशुतोष तिवारी ने लिया है। इस साक्षात्कार में भारतीय साहित्य, ख़ासतौर से बंगला साहित्य, रचनाकार की प्रतिबद्धता, लोक साहित्य, लोकगीत, बोली,आलोचना और कवि की रचनाधर्मिता जैसे व्यापक संदर्भों को लिया गया है।

बाबा त्रिलोचन शास्त्री का साक्षात्कार हिंदी साहित्य की अनुपम निधि है। जनपदीय भाषा के प्रश्न पर बाबा त्रिलोचन का उत्तर रोचक है- ' मैं स्थानीय शब्दों का प्रयोग भी किया, लेकिन केवल अवध में पूरा भारत मेरा घूमा है। जहाँ के शब्द मुझे अच्छे लगते है वहाँ शब्द मैं प्रयोग करता हूँ। राजस्थान का शब्द दे देता हूँ। पंजाब का शब्द मेरे काम का लगा तो मैं दे देता हूँ। और मेरा यह कहना है कि कवि पूरी राष्ट्रीय चेतना को अंदर रखना चाहिए।' स्वनिम पत्रिका का अंक कहानी केंद्रित होने के कारण लगभग ग्यारह कहानियों का प्रकाशन किया गया। इन कहानियों में हमारे समय का दारुण सच अभिव्यक्त हुआ है। महेश सिंह की कहानी महामारी में बुधिराम, सारिका ठाकुर की कहानी मोची, रमेश चन्द्र

की कहानी सरस्वती, रमेश गोहे की कहानी वनग्राम की लड़कियां आदि उल्लेखनीय कहानियाँ है । वनग्राम की लड़कियां कहानी को हिंदी लंबी कहानियों के कैटलॉग में रख सकते हैं । यह कहानी, गाँव, परिवेश और समाज का व्यापक और मार्मिक वितान खींचने सफल होती है । स्वनिम पत्रिका का विशेष स्तंभ हस्तक्षेप है । इस स्तंभ में वैचारिक प्रतिबद्धता के दिग्दर्शन होते हैं । हस्तक्षेप स्तंभ में समय, समाज और संस्कृति पर आधारित लेख है । स्वनिम के इस अंक में, हस्तक्षेप कॉलम के अंतर्गत हिंदी के तीन वरिष्ठ कथाकार शामिल हैं । तीनों हिंदी के उज्ज्वलमान सितारे हैं । एक ख़त मैकाले के नाम प्रियवंद का प्रसिद्ध लेख है । यह लेख निश्चित तौर पर हिंदी के पाठकों के द्वारा पढ़ा जाना चाहिए । इस लेख में मैकाले की शिक्षा व्यवस्था का सच उभरकर सामने आता है । फ़िलहाल तो कोई मुक्तिमार्ग नहीं है- कथाकार देवेंद्र का लेख है । यह लेख वस्तुतः प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी मुक्तिमार्ग पर आधारित है । लेकिन यह लेख अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए मुक्तिमार्ग कहानी के अलावा प्रेमचंद और प्रेमचंद के समय का मूल्यांकन करता है । देवेंद्र अपने लेख में लिखते हैं- 'वह आदर्शों का युग का था । जीवन और समाज के लगभग हर स्तर पर आदर्श की प्रतिष्ठा थी । कार्यक्षेत्र की भिन्नता के बावजूद गांधी और प्रेमचंद उस युग के सहोदर जैसे थे । दोनों की चिंता के केंद्र में भारत के गाँव थे ।' इसी लेख में प्रेमचंद की सीमाओं और दलित साहित्य के आलोचक डॉ. धर्मवीर के मत का समर्थन करते हुए देवेंद्र लिखते हैं- 'डॉ धर्मवीर ने प्रेमचंद की कुछ सीमाओं को बताते हुए 'सामंत का मुंशी प्रेमचंद' आलोचना की पुस्तक लिखी हैं । वैसे तो पुस्तक का आधार कफ़न कहानी है । प्रेमचंद को लेकर उनकी मुख्य आपत्ति इस बात पर है कि कहानी के दोनों लंपट चरित्र जाति के चमार क्यों हैं । जबकि अमानवीय कारण की प्रक्रिया सवर्णों में ज्यादा होती है । ऐसा करने के पीछे प्रेमचंद पर दलित विरोधी संस्कारों का प्रभाव है।

मुक्तिमार्ग कहानी में हरिहर नामक जो चमार जाति का चरित्र दुष्ट के रूप में गढ़ा गया है उसे देखते हुए डॉ. धर्मवीर की बात काफी हद तक पुष्ट होती जान पड़ती है । बावजूद इन छोटी मोटी आपत्तियों के सचाई यह है कि बाद के दौर में पैदा होने वाले कथाकारों की एक भरी-पूरी पीढ़ी ने प्रेमचंद से कहानी का ककहरा सीखा है ।' आजकल हिंदी कहानी पर इतने सुचिंतित व गंभीर लेख बहुत कम देखने को मिलते हैं । फिर तेरा फ़साना याद आया हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार महेश कटारे की रचना है । जिजीवियन स्तंभ गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के नवोदित कवियों-लेखकों के लिए आरक्षित है । एकांत सुष्मिता बारीक की कहानी है । यह कहानी बाल मनोवैज्ञानिक पर आधारित है । एकांत की उम्र लगभग चार-पाँच वर्ष की है । भारतीय समाज में पारिवारिक कलह से उत्पन्न बाल मन पर पड़ने वाले प्रभाव को रेखांकित करने का प्रयास सुष्मिता ने अपनी कहानी एकांत में किया है । इस अंक में गायत्री पटेल की कहानी अँधेरे में रौशनी की तलाशाभी उल्लेखनीय है । स्वनिम पत्रिका का दूसरा अंक पहले अंक की तुलना में ज्यादा व्यापक और बहुआयामी है । बिलासपुर जैसे छोटे शहर में जहाँ हिंदी साहित्य का तथाकथित स्वीकृत केंद्र भले न हो, लेकिन स्वनिम पत्रिका अपने फलक और वैचारिक आयामों के आधार पर हिंदी के बड़े-बड़े तथाकथित केंद्रों को चुनौती दे रही है । और अंत में फ़िलहाल इतना कि, स्वनिम के अगले अंक के लिए उत्साहित हूँ।